ऋषि विश्वामित्र विद्या फाउण्डेशन

Rishi Vishwamitra Vidya Foundation

ऋग्वेद मन्त्र १.३५.५

स्वाध्याय एवं विस्तृत व्याख्या

वि जनां॑ञ्छ्या॒वाः शिंति॒पादों॑ अख्य॒न्रथं॒ हिरं॑ण्यप्रउ॒गं वहं॑न्तः ।
शश्व॒द्विशं॑ः सवि॒तुर्दैव्यं॑स्यो॒पस्थे॒ विश्वा॒ भुवं॑नानि तस्थुः ॥

प्रस्तुतकर्ता (Presented by):

आचार्य कपिल (Acharya Kapil)

सम्पर्क सूत्र (Contact No.): 8756390767

ऋग्वेद मन्त्र १.३५.५ : स्वाध्याय एवं व्याख्या

१. मूल मन्त्र (पदानपाठ एवं संहिता पाठ)

वि जनाञ्छ्यावाः शितिपादो अख्यन्रथं हिरण्यप्रउगं वहन्तः ।
शश्वद्विशः सवितुर्दैव्यस्योपस्थे विश्वा भुवनानि तस्थुः ॥

२. शब्दार्थ

पद	अर्थ
वि अख्यन्	विशेष रूप से प्रकाशित करते हैं।
जनान्	मनुष्यों या प्राणियों को।
श्यावाः	श्याव (व्यापक गति वाले / किरण रूप) सूर्य के घोड़े।
शितिपादः	श्वेत चरणों (किरणों) वाले।
रथम्	रथ (प्रकाशयान) को।
हिरण्यप्रउगम्	सुवर्णमय अग्रभाग (ऊर्जा के केंद्र) वाले रथ को।
वहन्तः	वहन करते हुए।
शश्वत्	निरंतर / सर्वदा।
विशः	प्रजाएँ / समस्त प्राणी।
दैव्यस्य	दिव्य गुणों वाले।
सवितुः	सूर्य / प्रेरक देवता के।
उपस्थे	गोद में (समीप स्थान में)।
विश्वा भुवनानि	समस्त लोक / संसार।
तस्थुः	स्थित हैं / आश्रित हैं।

३. आचार्यों के भाष्यार्थ (अनुवाद)

(क) सायण भाष्य (वैदिकार्थ / पौराणिक-पारंपरिक दृष्टिकोण)

"श्यावाः एतन्नामकाः सूर्यस्याश्वाः... श्वेतैः पादैरुपेताः, सुवर्णमयप्रउगयुक्तं (रथस्य मुखम्) रथं वहन्तः, प्राणिनः विशेषेण प्रकाशितवन्तः। सर्वदा प्रजाः, इतरदेवसंबन्धिनः प्रेरकस्य सूर्यस्य समीपस्थाने स्थितवत्यः। न केवलं प्रजाः, किं तर्हि सर्वे च लोकाः प्रकाशाय सूर्यसमीपे तस्थुः।"

अर्थात्: श्याव नाम के (श्वेत चरणों वाले) सूर्य के घोड़े सुवर्णमय रथ को वहन करते हुए प्राणियों को प्रकाशित करते हैं। समस्त प्रजा और लोक उस प्रेरक दिव्य सूर्य के समीप (उसके प्रकाश में) स्थित रहते हैं।

(ख) स्वामी दयानन्द सरस्वती भाष्य (आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण)

"विदुषः, श्यायन्ते प्राप्नुवन्ति ते... शितयः शुक्लाः पादा अंशा येषां किरणानान्ते... हिरण्यस्य ज्योतिषोऽग्नेः प्रउगं सुखवत्स्थानं यस्मिँस्तं प्रयोगार्हम्... पृथिवीगोलादीनि... तिष्ठन्ति।"

अर्थात्: विशेष ज्ञानवान्, श्यावाः (व्याप्त होने वाले), शितिपादः (श्वेत किरणों वाले किरणपुंज), हिरण्यप्रउगम् (ज्योतिर्मय अग्निस्थान वाले रथ को) वहन करते हुए, सवितुः (सूर्यलोक के) उपस्थे (समीप स्थान में) विश्वा भुवनानि (पृथिवीगोलादि समस्त लोक) निरंतर स्थित हैं।

४. व्याकरण और पद-सिद्धि (Grammatic Word Meaning Proof)

शितिपादः: 'शितयः श्वेताः पादाः यस्य सः' (बहुव्रीहि समास)। 'पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः' (पा. सू. ५.४.१३८) से पादशब्द के अंत्य 'अन्' का लोप।

अख्यन्: 'ख्या' धातु से लुङ् लकार, प्रथम पुरुष बहुवचन। 'अस्यतिवक्तिख्यातिभ्योऽङ्' (पा. सू.) से च्लेः अङादेश।

हिरण्यप्रउगम्: 'हिरण्यस्य प्रउगम्' (षष्ठी तत्पुरुष) अथवा बहुव्रीहि समास, पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्व।

दैव्यस्य: देव शब्दानात् प्राग्दीव्यतीयो यञ् प्रत्यय ('देवाद्यञञौ' पा. सू. ४.१.८५)। 'तद्धितेष्वचामादेः' से आदिवृद्धि और आद्युदात्तत्व।

उपस्थे: 'उप + स्था + क' प्रत्यय। 'आतश्चोपसर्गे' से क प्रत्यय तथा 'आतो लोप इटि च' से आकार का लोप।

५. मन्त्र का वैज्ञानिक दृष्टिकोण (Scientific Approach)

यह मन्त्र ब्रह्मांडीय भौतिकी (Cosmic Physics) और सौर ऊर्जा के सिद्धांतों को अद्भुत रूप से प्रकट करता है:

सौर ऊर्जा एवं गतिशीलता (Solar Dynamics): सूर्य की किरणें (श्यावाः शितिपादः) अंतरिक्ष में निरंतर गति करती हैं। 'हिरण्यप्रउगम् रथम्' सूर्य के स्वर्ण-वर्ण (Gold-colored/Plasma spectrum) प्रकाश पुंज और उसके ऊर्जा केंद्र का वैज्ञानिक प्रतीक है।

गुरुत्वाकर्षण और स्थिति (Gravitational Mechanics): स्वामी दयानन्द जी ने 'भुवनानि' का अर्थ 'पृथिवीगोलादीनि' (Earth and planetary globes) किया है। यह इस तथ्य को दर्शाता है कि सौर मंडल के समस्त ग्रह और लोक सूर्य ("सवितुः उपस्थे") की गुरुत्वाकर्षण शक्ति की 'गोद' में निरंतर व्यवस्थित और संतुलित रूप से स्थित (तस्थुः) हैं।

प्रकाश का स्रोत: सम्पूर्ण जीवजगत और भूमंडलीय गतिविधियां सूर्य के प्रकाश और ऊर्जा पर निर्भर करती हैं, जिसका सुंदर वर्णन इस मन्त्र में किया गया है।